# पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

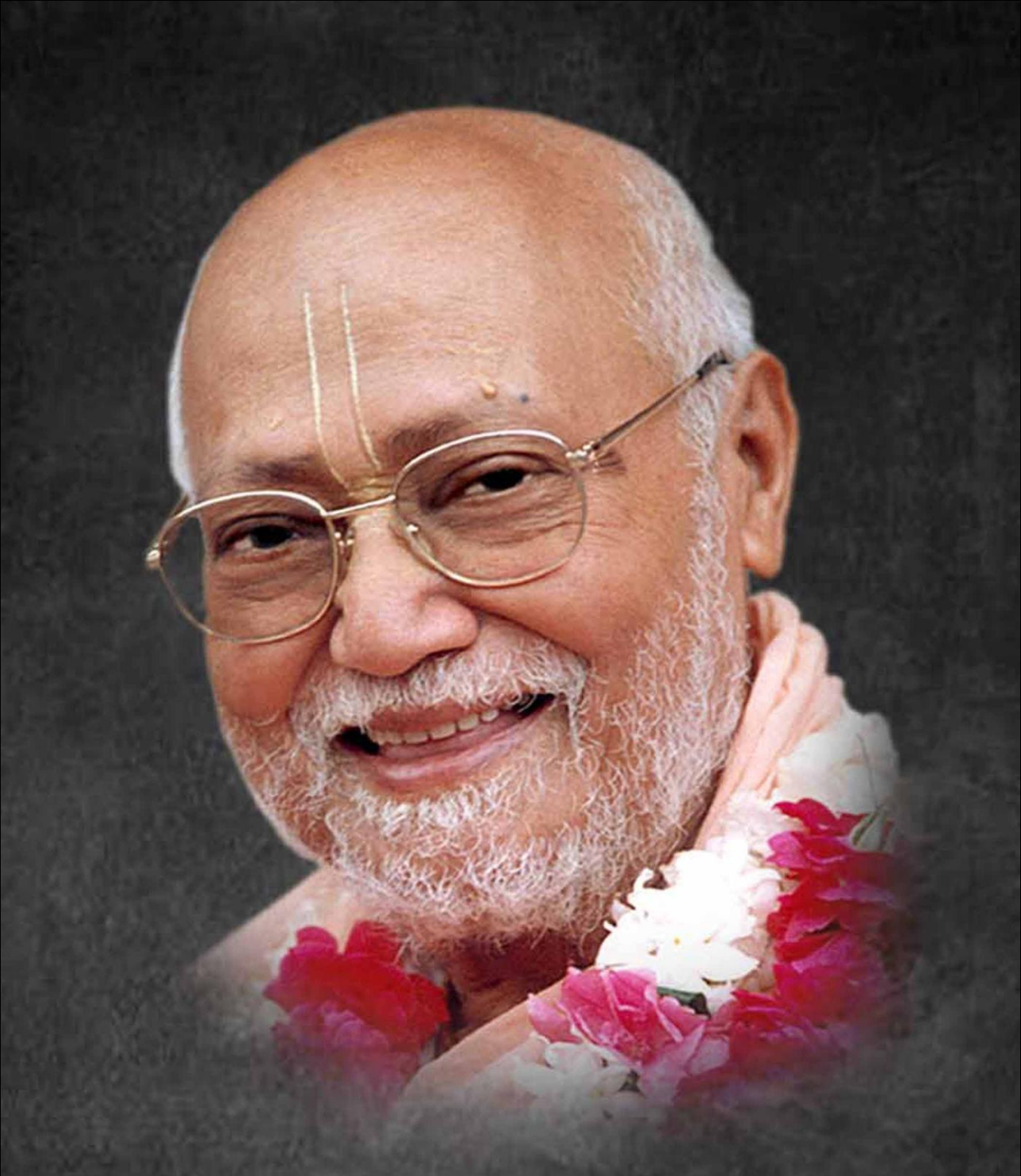

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

# तृतीय खण्ड

## भाग – 18

श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ,
ईशोद्यान, श्रीमायापुर, नदिया

श्रीलगुरुदेव

कोलकाता 86-ए रासबिहारी एवेन्यु पर मठाश्रित गृहस्थ भक्त श्री गोविन्द चन्द्र दासाधिकारी, सेवासुन्दर जी की प्रचेष्टा से सन् 1955 में मठ-प्रतिष्ठा का इतिहास इससे पहले इसी ग्रन्थ के द्वितीय खण्ड में वर्णित हुआ है। श्रीचैतन्य महाप्रभु जी के आविर्भाव स्थान और माध्याह्निक लीला - भूमि श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान में भी श्री गोविन्द चन्द्र दासाधिकारी ने कुछ ज़मीन खरीद ली थी। उस समय वहाँ पर विशेष कोई भी बस्ती आदि

नहीं थी, ज़मीन का मूल्य भी सामान्य ही था। जब श्रील गुरुदेव जी ने श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान में मठ संस्थापन की इच्छा प्रकाश की तो श्री गोविन्द प्रभु ने अपनी ली हुई ज़मीन श्रील गुरुदेव जी को दे दी। श्री गोविन्द प्रभु द्वारा प्रदत्त ज़मीन के नज़दीक वाली ज़मीन को भी खरीद लिया गया। श्रील गुरुदेव जी ने वहाँ पर मठ का कार्य आरम्भ करने के लिये टीन के व फूस के अस्थायी कमरे बनवाये । श्रील गुरुदेव जी के निर्देशानुसार उनके आश्रित सेवक श्री कृष्ण प्रसाद, श्री भगवान् दास ब्रह्मचारी और श्री

राधाविनोद ब्रह्मचारी, उत्साह के साथ सेवाकार्य में नियोजित होकर उस स्थान की महिमा के प्रचार में जुट गये। उस समय मठ के बन्धुरूप से श्री साधुमण्डल, श्री जयगोविन्द बनर्जी व श्री कानाई वैद्य आदि कुछेक व्यक्ति मठ के अनुकूल पड़ोसी थे। साधारणतः देखा जाता है कि सेवाकार्य में बाधा आने पर सेवकों में उत्साह और दो गुणा बढ़ जाता है। अक्सर पास के ही एक पुराने मठ के लोगों द्वारा यह भय दिखाया जाता था कि ईशोद्यान में मठ संस्थापन नहीं करने दिया जायेगा व ऐसा करने पर उसे

उखाड़कर फेंक दिया जायेगा । वास्तव में वही हुआ । यह बात अलग है कि टीन की छत वाले कमरों की छतों को किसी व्यक्ति ने नहीं तूफान ने उखाड़ फेंका। श्रील गुरुदेव जी के पहले के त्यागी शिष्यों में एक प्रधान सेवक श्री कृष्ण प्रसाद ब्रह्मचारी उस समय इस मठ की सेवा का दायित्त्व ग्रहण करने में श्रील गुरुदेव जी द्वारा नियोजित हुये थे। श्री कृष्ण प्रसाद प्रभु पहले श्रीमन् महाप्रभु जी के जन्मस्थान पर श्रीवास- आंगन में सेवा करते थे। श्रीभगवद् इच्छानुसार वे उक्त सेवा छोड़ने में मज़बूर हुए थे व इसी

कारण पहले वे चाकदह में काँठालपुली स्थित महेश पण्डित जी के श्रीपाट पर आये व फिर वे श्रील गुरुदेव जी द्वारा श्रीमायापुर-ईशोद्यान में नये संस्थापित मठ की सेवा के दायित्व में नियोजित हुये। जब वे अन्यान्य वैष्णवों के साथ (पूर्वोल्लिखित तीन सेवकों के अलावा पूज्यपाद श्री कृष्ण केशव ब्रह्मचारी, श्री नरोत्तम ब्रह्मचारी, श्री मदनगोपाल ब्रह्मचारी और श्री चैतन्य चरण दासाधिकारी) मायापुर ईशोधान की सेवा में नियोजित थे तो एक दिन बड़ी तेज़ आँधी आयी और उससे उनके रहने के लिए बने

अस्थायी कमरों के सब टीन वगैरह उड़कर दूर जा गिरे। सौभाग्य से ऐसी दुर्घटना से उनके प्राण बच गये। खुली जगह में अस्थायी घर में दुबारा ऐसी दुर्घटना हो सकती है- ऐसी चिन्ता से, श्रील गुरुदेव जी ने कुछेक पक्के कमरे बनवा दिये । पक्के कमरे बनने के बाद श्रीधाम मायापुर ईशोद्यान में एक कमरे के अन्दर श्रीश्री गुरु-गौरांग राधा मदनमोहन जी के श्रीविग्रहों की प्रतिष्ठा हुई और उसी वर्ष 16-कोसीय श्रीनवद्वीप-धाम परिक्रमा पहली बार हुई। 19 मार्च 1956 सोमवार को पंचरात्रिक और

श्रीभागवत विधानानुसार श्रील गुरुदेव जी की सेवा अध्यक्षता और पौरोहित्य में श्रील गुरुदेव जी के सतीर्थ गौड़ीय त्रिदण्डियों की उपस्थिति में संकीर्त्तन के माध्यम से श्रीश्रीगुरु गौरांग तथा छोटे श्रीराधा-मदन मोहन जी के श्रीविग्रह प्रतिष्टित हुये। उस दिन के महोत्सव में साधुओं के अलावा नवद्वीपधाम परिक्रमा में योगदानकारी एवं नवद्वीप शहर, भारुईडांगा, श्रीनाथपुर, बल्लालदीघी, वामन पुकुर आदि विभिन्न स्थानों के दो हज़ार से अधिक नर-नारियों ने परितृप्ति के साथ विचित्र महाप्रसाद

ग्रहण किया। श्रीविग्रहों का अधिवासकृत्य प्रतिष्ठा के पहले दिन तथा श्रीविग्रहों की प्रतिष्ठा के दिन श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा का अधिवास कृत्य सम्पन्न हुआ। नवधाभक्ति के पीठस्वरूप श्रीअन्तर्द्वीपसीमन्तद्वीप-गोद्रुमद्वीप-मध्यद्वीप-कोलद्वीप - ऋतु द्वीप-जह्नु द्वीपमोदद्रुमद्वीप-रुद्रद्वीपात्मक 16-कोसी श्रीनवद्वीप धाम परिक्रमा अनुष्ठान 20 मार्च मंगलवार से 25 मार्च रविवार तक हुआ । 25 मार्च रविवार श्रीगौराविर्भाव अधिवास-कीर्त्तन हुआ एवं 26 मार्च को गौरआविर्भाव तिथि पूजा महोत्सव,

श्रीचैतन्यचरितामृत का परायण, उपवास-व्रत व हरिनाम संकीर्त्तन के साथ सुसम्पन्न हुआ। अगले दिन अर्थात् श्रीजगन्नाथ मिश्रोत्सव में हज़ारों नर-नारियों ने महाप्रसाद ग्रहण किया। सोमवार 4 फरवरी 1957 को शुक्ला चतुर्थी तिथि के दिन परमाराध्य श्रील गुरुदेव जी की सेवाध्यक्षता और पौरोहित्य में श्रीराधामदनमोहन जी के बड़े विग्रह संकीर्त्तन के माध्यम से प्रकटित हुये। इस विशाल अनुष्ठान में परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डिं स्वामी श्रीमद् भक्ति गौरव वैखानस महाराज, परमपूज्यपाद

परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति विज्ञान आश्रम महाराज, परमपूज्यपाद श्रीमद् महानन्द प्रभु, परमपूज्यपाद परिव्राजकाचार्य त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्ति प्रापण दामोदर महाराज, परम पूज्यपाद सागर महाराज, पूज्यपाद मुकुन्द दास बाबा जी महाराज, पूज्यपाद श्रीमद् कृष्णकेशव ब्रह्मचारी प्रभु, पूज्यपाद उद्धारण प्रभु, पूज्यपाद नारायण मुखर्जी प्रभु और पूज्यपाद पद्मनाभ महाराज जी आदि पूजनीय वैष्णवों ने योगदान दिया था। परमपूज्यपाद श्रीमद् भक्ति विज्ञान आश्रम

महाराज जी के पौरोहित्य में वैष्णव होम कार्य सम्पन्न हुआ। उनके सहायक रूप से थे - श्री ललिताचरण ब्रह्मचारी । इसके इलावा श्रील गुरुदेव जी के श्रीचरणाश्रित शिष्यों में श्री कृष्णप्रसाद ब्रह्मचारी, श्री लोकनाथ ब्रह्मचारी श्री कृष्ण बल्लभ ब्रह्मचारी एवं श्री राधा रमण ब्रह्मचारी ने अनुष्ठान में उपस्थित रहकर सेवाकार्य में विभिन्न प्रकार से सहायता की थी । श्रीराधामदन मोहन विग्रहों एवं उनके प्रतिष्ठा उत्सव का सारा खर्चा देकर कोलकाता निवासी श्री राधाकृष्ण

चामारिया जी धन्यवाद के पात्र हुये| शहर नवद्वीप, गादिगाछा, स्वरूपगंज, श्रीमायापुर, बल्लालदीघी, वामनपुकुर, भारुईडाङ्गा, चाँपाहाटी आदि स्थानों से आए सैकड़ों नरनारियों ने विग्रह-प्रतिष्ठा महोत्सव में योगदान दिया।

श्रीलगुरुदेव